IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

दक्षिण–पूर्व एशिया में भारत की पहुंचः एक्ट ईस्ट नीति की उपलब्धियाँ और चुनौतियाँ

(रश्मि बाजपेयी, शोध छात्रा, श्यामा प्रसाद मुखर्जी डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय प्रयागराज)

भूमिकाः लुक ईस्ट से एक्ट ईस्ट की यात्रा

भारत की लुक ईस्ट नीति की शुरुआत 1992 में तत्कालीन प्रधानमंत्री पी. वी. नरसिम्हा राव के नेतृत्व में हुई। इसका उद्देश्य दक्षिण–पूर्व एशिया के देशों के साथ भारत के आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक संबंधों को पुनर्जीवित करना था। शीत युद्ध की समाप्ति और सोवियत संघ के विघटन के बाद भारत के लिए आवश्यक हो गया था कि वह नए आर्थिक साझेदार और रणनीतिक सहयोगी खोजे। इस आवश्यकता के तहत दक्षिण–पूर्व एशिया का महत्व बढ़ा और लुक ईस्ट नीति का जन्म हुआ।

1990 के दशक में इस नीति का ध्यान मुख्य रूप से आर्थिक सहयोग, व्यापार वृद्धि, और निवेश के अवसर खोजने तक सीमित रहा। आसियान देशों के साथ साझेदारी बढ़ाने के लिए भारत ने विभिन्न द्विपक्षीय और बहुपक्षीय मंचों का उपयोग किया। 2003 में आसियान के साथ भारत का मुक्त व्यापार समझौता (FTA) एक महत्वपूर्ण कदम था, जिससे भारत–आसियान आर्थिक संबंधों को मजबूती मिली।

2014 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में यह नीति एक्ट ईस्ट नीति में परिवर्तित हुई। यह परिवर्तन मात्र नाम का नहीं, बल्कि दृष्टिकोण और क्रियान्वयन में मूलभूत बदलाव था। एक्ट ईस्ट नीति में भारत ने अपनी प्रतिबद्धता को केवल आर्थिक संबंधों तक सीमित न रखकर, इसे सामरिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक आयामों तक विस्तृत किया। इसका अर्थ था कि भारत अब इस क्षेत्र में एक सक्रिय भूमिका निभाने के लिए तैयार था।

एक्ट ईस्ट नीति के छह प्रमुख उद्देश्य स्पष्ट रूप से निर्धारित किए गएः पहला, आर्थिक एकीकरण को गहरा करना, जिसमें व्यापार, निवेश, और क्षेत्रीय आर्थिक साझेदारी को बढ़ावा देना शामिल था। दूसरा, भौतिक संपर्क को मजबूत करना, जिसमें भूमि, समुद्री और वायु संपर्क परियोजनाओं का विस्तार प्रमुख था। तीसरा, डिजिटल कनेक्टिविटी के माध्यम से प्रौद्योगिकी आधारित संबंधों का विस्तार करना। चौथा, सामरिक साझेदारियों को मजबूत बनाकर क्षेत्रीय सुरक्षा में अपनी भागीदारी बढ़ाना। पाँचवाँ, सांस्कृतिक संवाद के जरिए ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों को पुनः सक्रिय करना। छठा, भारत को हिंद–प्रशांत क्षेत्र में एक केंद्रीय शक्ति के रूप में स्थापित करना।

इस नीति में आसियान की केंद्रीयता एक प्रमुख रणनीतिक स्तंभ के रूप में स्थापित हुई। भारत ने स्पष्ट रूप से आसियान को अपनी क्षेत्रीय रणनीति के केंद्र में रखा और उसके नेतृत्व वाले विभिन्न क्षेत्रीय मंचों जैसे–East Asia Summit (EAS), ASEAN Regional Forum (ARF), ASEAN Defence Ministers Meeting Plus (ADMM-Plus)–में अपनी भागीदारी बढ़ाई। इस प्रकार, एक्ट ईस्ट नीति ने भारत को एक सक्रिय, प्रतिबद्ध और जिम्मेदार क्षेत्रीय खिलाड़ी के रूप में पेश किया, जो क्षेत्रीय स्थिरता और समृद्धि में योगदान देने के लिए तैयार है।

मुख्य शब्दः लुक ईस्ट, एक्ट ईस्ट, आसियान, दक्षिण पूर्व एशिया, भारत

रक्षा सहयोगः भारत की ठोस प्रगति

एक्ट ईस्ट नीति के अंतर्गत रक्षा सहयोग का आयाम विशेष रूप से उल्लेखनीय रहा है। भारत ने इस क्षेत्र में न केवल अपने रक्षा निर्यात को बढ़ाया बल्कि सामरिक स्तर पर अपनी भागीदारी भी महत्वपूर्ण ढंग से बढ़ाई। इसका सबसे स्पष्ट प्रमाण 2022 में फिलीपींस के साथ $375 मिलियन का ब्रह्मोस सुपरसोनिक मिसाइल सौदा था। यह सौदा न केवल मेक इन इंडिया पहल के लिए महत्वपूर्ण था, बल्कि दक्षिण–पूर्व एशिया में भारत के रक्षा उपकरणों की विश्वसनीयता का भी संकेत था।

ब्रह्मोस मिसाइल की पहली खेप अप्रैल 2024 में फिलीपींस पहुंची और दूसरी खेप अप्रैल 2025 में वितरित की गई। इंडोनेशिया और वियतनाम जैसे अन्य आसियान देशों ने भी ब्रह्मोस मिसाइल प्रणाली में गहरी रुचि दिखाई है, जहां इंडोनेशिया के साथ लगभग $450 मिलियन और वियतनाम के साथ लगभग $700 मिलियन मूल्य के संभावित रक्षा सौदों पर चर्चा जारी है। इसके अलावा, भारत इंडोनेशिया के Su–30 लड़ाकू विमान बेड़े की रखरखाव सेवाओं में संभावित सहयोग को भी तलाश रहा है।

क्षेत्र में भारत के रक्षा सहयोग का एक और महत्वपूर्ण पहलू सैन्य अभ्यास और नौसैनिक कूटनीति है। भारत ने दक्षिण–पूर्व एशियाई देशों के साथ विभिन्न सैन्य अभ्यासों जैसे–SIMBEX (भारत–सिंगापुर), MILAN, AIME (2023), और ADMM–Plus अभ्यासों में सक्रियता से भाग लिया है। फरवरी 2023 में INS सिंधुकेसरी की इंडोनेशिया यात्रा, और सिंगापुर तथा वियतनाम के साथ लॉजिस्टिक समझौतों से भारत की सामरिक साख और नौसैनिक पहुंच स्पष्ट रूप से बढ़ी है।

हालांकि, Lowy Institute द्वारा प्रकाशित Asia Power Index के अनुसार, रक्षा नेटवर्क और क्षेत्रीय रक्षा भागीदारी के मामले में भारत की भूमिका अब भी अन्य प्रमुख शक्तियों की तुलना में सीमित है। इसलिए रक्षा सहयोग क्षेत्र में भारत के लिए आगे बढ़ने की संभावनाएं बहुत हैं, परंतु इसके लिए और अधिक प्रभावी तथा सतत प्रयास आवश्यक हैं।

संपर्क परियोजनाएँः महत्वाकांक्षा बनाम यथार्थ (म्यांमार केंद्रित)

एक्ट ईस्ट नीति की सफल क्रियान्विति के लिए भूमि, समुद्र और हवाई संपर्क को मजबूत करना बेहद आवश्यक माना गया था। विशेषकर भूमि संपर्क परियोजनाएँ, जो भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र को म्यांमार के माध्यम से दक्षिण–पूर्व एशिया के बाज़ारों तक जोड़ती हैं, नीति की सफलता के लिए बेहद महत्वपूर्ण थीं। लेकिन ये परियोजनाएँ अनेक जटिलताओं और अस्थिरता के कारण अपेक्षाओं पर खरी नहीं उतर सकीं।

भारत–म्यांमार–थाईलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग (IMT) एक ऐसी महत्त्वाकांक्षी परियोजना थी जिसका उद्देश्य क्षेत्रीय एकीकरण और आर्थिक विकास को बढ़ावा देना था। इस परियोजना की कल्पना वर्ष 2002 में हुई थी और यह लगभग 1360 किलोमीटर लंबी है। **फरवरी** 2025 तक लगभग 70 प्रतिशत कार्य पूर्ण हो चुका है, लेकिन म्यांमार में स्थित कालावा–यागी खंड सुरक्षा और राजनीतिक अस्थिरता के कारण लंबे समय से स्थगित है। भारत के विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर ने इसे क्षेत्रीय व्यापार और संपर्क के लिए गेम चेंजर के रूप में देखा, लेकिन यह भी स्वीकार किया कि म्यांमार में मौजूदा राजनीतिक हालात ने परियोजना को लगभग ठप कर दिया है।

दूसरी महत्वपूर्ण परियोजना, कालादान मल्टी–मोडल ट्रांजिट ट्रांसपोर्ट प्रोजेक्ट (KMMTT), जो भारत के कोलकाता बंदरगाह को मिज़ोरम से जोड़ती है, समान रूप से महत्त्वपूर्ण है। इस परियोजना का समुद्री और नदी मार्ग (सितवे बंदरगाह) मई 2023 से कार्यान्वित हो चुका है, लेकिन अंतिम चरण का 109 किलोमीटर लंबा सड़क खंड–जो म्यांमार के पलेटवा से भारतीय सीमा पर ज़ोरिनपुई तक फैला है–मात्र 10: तक पूर्ण हो पाया है। इस सड़क निर्माण कार्य में भारी व्यवधान आए हैं, विशेषकर पलेटवा क्षेत्र में स्थानीय जातीय समूहों और म्यांमार सेना के बीच जारी संघर्ष के कारण।

हालांकि, एक्ट ईस्ट नीति के तहत संपर्क परियोजनाओं के अन्य माध्यमों में भारत को कुछ सफलता मिली है। उदाहरण के लिए, भारत और दक्षिण–पूर्व एशिया के देशों के बीच हवाई संपर्क में वृद्धि हुई है, जिसमें उड़ानों की संख्या और वीजा उदारीकरण प्रमुख हैं। डिजिटल संपर्क भी मजबूत हुआ है, जिसका स्पष्ट उदाहरण भारत–सिंगापुर UPI–PayNow सहयोग है। यह डिजिटल लेन–देन के क्षेत्र में एक अग्रणी उदाहरण बन गया है।

फिर भी, इन सफलताओं के बावजूद म्यांमार के माध्यम से भूमि संपर्क की चुनौती एक्ट ईस्ट नीति की महत्वपूर्ण विफलता बनी हुई है। क्षेत्र की राजनीतिक अस्थिरता और सुरक्षा संबंधी चुनौतियाँ इस नीति के मूलभूत उद्देश्यों के लिए एक बड़ी बाधा सिद्ध हुई हैं।

रणनीतिक साझेदारियाँः संवाद और समन्वय

भारत की एक्ट ईस्ट नीति के तहत रणनीतिक साझेदारियाँ एक महत्वपूर्ण स्तंभ रही हैं। नीति की शुरुआत से ही भारत ने आसियान देशों और दक्षिण–पूर्व एशिया के अन्य प्रमुख देशों के साथ गहरे सामरिक और कूटनीतिक संबंध विकसित करने पर जोर दिया। नवंबर 2022 में भारत और आसियान ने अपने संबंधों को समग्र रणनीतिक साझेदारी (Comprehensive Strategic Partnership) के स्तर तक उन्नत किया, जो क्षेत्रीय सहयोग और समन्वय की प्रतिबद्धता का महत्वपूर्ण संकेत था।

अप्रैल 2025 में थाईलैंड के साथ भारत की रणनीतिक साझेदारी को विशेष महत्त्व दिया गया, जो क्षेत्र में भारत के बढ़ते प्रभाव और सहयोग की इच्छा को दर्शाता है। इसके अतिरिक्त, वियतनाम, इंडोनेशिया, सिंगापुर जैसे देशों के साथ भारत के पहले से ही मजबूत और स्थायी द्विपक्षीय संबंध मौजूद हैं। इन देशों के साथ नियमित उच्चस्तरीय संवाद, रक्षा सहयोग, और आर्थिक साझेदारी भारत की रणनीतिक प्राथमिकताओं को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं।

भारत की भागीदारी क्षेत्रीय बहुपक्षीय मंचों जैसे East Asia Summit (EAS), ASEAN Regional Forum (ARF), और ASEAN Defence Ministers Meeting Plus (ADMM-Plus) में भी निरंतर बनी रही है। इन मंचों पर भारत ने समुद्री सुरक्षा, आतंकवाद–रोधी सहयोग, आपदा प्रबंधन और मानवीय सहायता जैसे मुद्दों पर सक्रियता से अपनी भूमिका निभाई है।

भारत की हिंद–प्रशांत महासागर पहल (Indo&Pacific Ocean Initiative - IPOI) SAGAR Security and Growth for All in the Region) नीति ने आसियान देशों की समुद्री सुरक्षा और क्षेत्रीय स्थिरता के उद्देश्यों के साथ गहरा समन्वय स्थापित किया है। ASEAN Outlook on Indo-Pacific (AOIP) के प्रति भारत की प्रतिबद्धता ने स्पष्ट रूप से दर्शाया है कि भारत क्षेत्र में एक नियम–आधारित व्यवस्था का समर्थक है, जो कि विशेषकर चीन की बढ़ती गतिविधियों के परिप्रेक्ष्य में अधिक प्रासंगिक हो गया है।

आर्थिक सहयोग में, हालांकि भारत–आसियान व्यापार 2024 में 130 बिलियन डॉलर तक पहुंचा, यह अब भी चीन–आसियान व्यापार की तुलना में काफी कम है। ASEAN-India Trade in Goods Agreement (AITIGA) की समीक्षा प्रक्रिया चालू है, जिसके तहत द्विपक्षीय व्यापारिक असंतुलन को कम करने और व्यापार में विविधता लाने के प्रयास हो रहे हैं।

ISEAS-Yusof Ishak Institute के सर्वेक्षणों से पता चलता है कि दक्षिण–पूर्व एशिया में भारत की भूमिका के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण तो है, लेकिन क्षमता और राजनीतिक इच्छाशक्ति के मामलों में अब भी संदेह और प्रश्न मौजूद हैं। भारत के लिए यह आवश्यक होगा कि वह अपनी क्षमता निर्माण और क्रियान्वयन की प्रतिबद्धताओं को स्पष्ट करे और उन्हें व्यावहारिक रूप से लागू करे।

रणनीतिक साझेदारी के इस अध्याय में, भारत की क्षेत्रीय भूमिका स्पष्ट रूप से मजबूत हुई है, लेकिन इसे निरंतर बनाए रखने और विस्तार करने के लिए भारत को आर्थिक और सामरिक संसाधनों की सक्रियता के साथ क्षेत्रीय अपेक्षाओं पर खरा उतरना होगा।

म्यांमार संकटः एक रणनीतिक बाधा

म्यांमार भारत की एक्ट ईस्ट नीति में एक महत्वपूर्ण स्तंभ के रूप में स्थापित था। भौगोलिक दृष्टि से, म्यांमार भारत के पूर्वोत्तर राज्यों को दक्षिण–पूर्व एशियाई देशों से जोड़ने के लिए महत्वपूर्ण भौतिक कड़ी के रूप में कार्य करता है। इसके अलावा, म्यांमार पूर्वोत्तर भारत की आंतरिक सुरक्षा के लिए भी बेहद अहम रहा है, विशेष रूप से सीमा पार सक्रिय उग्रवादी समूहों की गतिविधियों को नियंत्रित करने में।

फरवरी 2021 में म्यांमार में हुए सैन्य तख्तापलट ने इस रणनीतिक संतुलन को गहराई से प्रभावित किया है। इस तख्तापलट के बाद म्यांमार में राजनीतिक अस्थिरता और आंतरिक संघर्ष तीव्र हुए हैं, जिसने भारत की प्रमुख भौतिक संपर्क परियोजनाओं जैसे भारत–म्यांमार–थाईलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग (IMT) और कालादान मल्टी–मोडल ट्रांजिट ट्रांसपोर्ट प्रोजेक्ट (KMMTT) को लगभग रोक दिया है।

सीमा पर सुरक्षा चुनौतियाँ भी बढ़ गई हैं, जिसमें भारत के उत्तर–पूर्वी राज्य, विशेषकर मिज़ोरम में शरणार्थियों की बड़ी संख्या में आमद हुई है। इससे निपटने के लिए भारत सरकार ने सीमावर्ती इलाकों में बाड़ लगाने और फ्री मूवमेंट रेजीम (FMR) को निलंबित करने जैसे कदम उठाने पर विचार किया है।

इस जटिल स्थिति के जवाब में, भारत ने एक संतुलित रणनीति अपनाई है, जिसमें सैन्य सरकार के साथ कूटनीतिक संवाद बनाए रखना, प्रभावित क्षेत्रों में मानवीय सहायता प्रदान करना, और स्थानीय जातीय समूहों के साथ सीमित स्तर पर संपर्क बनाए रखना शामिल है। इसके अलावा, भारत ने ASEAN की पांच–सूत्रीय सहमति (Five - Point Consensus - 5PC) का सार्वजनिक रूप से समर्थन किया है, जो म्यांमार में शांति और स्थिरता बहाल करने की दिशा में एक क्षेत्रीय पहल है।

हालांकि, इस संकट ने एक्ट ईस्ट नीति की कार्यान्वयन रणनीति को गहरा नुकसान पहुंचाया है। क्षेत्रीय संपर्क के लिए स्थिरता और शांति आवश्यक शर्तें हैं, और म्यांमार में वर्तमान स्थिति भारत की क्षेत्रीय महत्वाकांक्षाओं के लिए एक गंभीर बाधा बन गई है। म्यांमार संकट ने यह स्पष्ट कर दिया है कि भारत की एक्ट ईस्ट नीति का भविष्य बहुत हद तक म्यांमार की आंतरिक राजनीतिक स्थिरता और सुरक्षा पर निर्भर करेगा।

निष्कर्ष

भारत की श्एक्ट ईस्ट नीतिश ने पिछले एक दशक में दक्षिण–पूर्व एशिया के साथ भारत के संबंधों को महत्वपूर्ण रूप से विकसित और गहरा किया है। इस नीति ने आर्थिक सहयोग, रक्षा सहयोग, क्षेत्रीय संवाद, और सांस्कृतिक आदान–प्रदान में उल्लेखनीय सफलताएँ अर्जित की हैं। फिलीपींस के साथ ब्रह्मोस मिसाइल समझौता, आसियान के साथ समग्र रणनीतिक साझेदारी, और क्षेत्रीय मंचों में भारत की सक्रिय भूमिका इसके प्रमाण हैं।

फिर भी, नीति के क्रियान्वयन में कुछ प्रमुख चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। विशेष रूप से, म्यांमार की राजनीतिक अस्थिरता और सुरक्षा संकटों ने भूमि संपर्क परियोजनाओं जैसे IMT और KMMTT को गहरा नुकसान पहुँचाया है। इन परियोजनाओं की देरी और स्थगन ने भारत की एक्ट ईस्ट नीति की समग्र प्रभावकारिता पर प्रश्नचिह्न लगा दिया है।

नीति की सफलता के लिए यह आवश्यक होगा कि भारत म्यांमार संकट के समाधान के लिए एक बहुआयामी रणनीति अपनाए। इसमें न केवल सैन्य और राजनीतिक नेताओं के साथ संवाद की निरंतरता हो, बल्कि प्रभावित क्षेत्रों में मानवाधिकारों और मानवीय सहायता की प्रतिबद्धता भी शामिल हो। इसके साथ ही भारत को वैकल्पिक रणनीतियों जैसे समुद्री और वायवीय संपर्क परियोजनाओं को प्राथमिकता देना होगा, जो भूमि संपर्क की चुनौतियों का प्रभावी विकल्प बन सकें।

चीन के आर्थिक प्रभाव को संतुलित करने और दक्षिण–पूर्व एशियाई देशों के साथ व्यापारिक संबंधों को और मजबूत करने के लिए भारत को ASEAN-India Trade in Goods Agreement (AITIGA) जैसी पहलों को प्रभावी रूप से लागू करना होगा। भारत की क्षेत्रीय महत्वाकांक्षा और प्रभावक्षेत्र की स्थिरता इस बात पर निर्भर करेगी कि वह अपनी आर्थिक, सामरिक, और सांस्कृतिक भागीदारी में निरंतरता और प्रभावशीलता बनाए रखता है।

इस प्रकार, एक्ट ईस्ट नीति का भविष्य इस बात पर निर्भर करेगा कि भारत वर्तमान चुनौतियों के समाधान में कितनी तेजी और प्रभावी ढंग से आगे बढ़ता है। इस नीति को महज एक राजनैतिक घोषणा से वास्तविक क्रियान्वयन की ओर ले जाने के लिए गंभीर आत्म–मूल्यांकन और रणनीतिक समायोजन आवश्यक हैं।

सन्दर्भ

1. राव, पी. वी. नरसिम्हा, इंडिया ऐंड साउथईस्ट एशियाः टुवर्ड्स सेक्योरिटी कन्वर्जेंस, कोनार्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2001, पृष्ठ 21–25
2. गांगुली, सुमित, इंडियाज़ फॉरेन पॉलिसीः रेट्रोस्पेक्ट ऐंड प्रॉस्पेक्ट, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, 2012, पृष्ठ 87–93
3. मुनी, एस. डी., इंडियाज़ लुक ईस्ट पॉलिसीः द स्ट्रैटेजिक डाइमेंशन, आईडीएसए और शिप्रा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2010, पृष्ठ 37–44
4. पंत, हर्ष वी., इंडियन फॉरेन पॉलिसीः ऐन ओवरव्यू, मैनचेस्टर यूनिवर्सिटी प्रेस, मैनचेस्टर, 2019, पृष्ठ 114–122
5. सिंह, स्वर्ण (संपा.), इंडियाज़ एक्ट ईस्ट पॉलिसीः रेटोरिक ऐंड रियलिटी, स्प्रिंगर, सिंगापुर, 2021, पृष्ठ 55–61
6. मिनिस्ट्री ऑफ एक्सटर्नल अफेयर्स, गवर्नमेंट ऑफ इंडिया, ऐक्ट ईस्ट पॉलिसी, www-mea-gov-in@act&east&policy-htm
7. लोवी इंस्टिट्यूट, एशिया पावर इंडेक्स 2024ः कंट्री प्रोफाइल दृ इंडिया, www-lowyinstitute-org@asia&power@
8. चक्रवर्ती, पिनाकी, इंडिया–आसियान रिलेशन्सः पास्ट, प्रेज़ेंट ऐंड फ्यूचर, पेंटागन प्रेस, नई दिल्ली, 2015, पृष्ठ 102–110
9. जयशंकर, सुब्रह्मण्यम, रिमार्क्स ऑन इंडिया–म्यांमार कनेक्टिविटी प्रोजेक्ट्स, एम.ई.ए. प्रेस रिलीज़, फरवरी 2025,
10. जोशी, मुरली मनोहर, इंडिया ऐंड साउथईस्ट एशियाः रिन्युइंग द एज–ओल्ड लिंकेजेस, रूपा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2013, पृष्ठ 69–75
11. पी.आई.बी. इंडिया, फर्स्ट ब्रह्मोस मिसाइल डिलीवर्ड टू फिलीपींस, प्रेस इन्फॉर्मेशन ब्यूरो, अप्रैल 2024,
12. ए.एस.ई.ए.एन. सेक्रेटेरियट, ए.एस.ई.ए.एन. आउटलुक ऑन द इंडो–पैसिफिक (ए.ओ.आई.पी.), www-asean-org@aoip
13. आई.एस.ई.ए.एस. दृ यूसुफ इशाक इंस्टिट्यूट, द स्टेट ऑफ साउथईस्ट एशिया 2024 सर्वे रिपोर्ट, www-iseas-edu-sg@articles&commentaries@state&of&sea&2024@]
14. मिनिस्ट्री ऑफ पोर्ट्स, शिपिंग एंड वॉटरवेज़, कलादान मल्टी–मोडल ट्रांज़िट ट्रांसपोर्ट प्रोजेक्ट, www-shipmin-gov-in
15. डिपार्टमेंट ऑफ डिफेन्स प्रोडक्शन, इंडिया'ज़ डिफेन्स एक्सपोर्ट हाइलाइट्स 2022–2025, www-ddpmod-gov-in
16. चौधरी, राजीव रंजन, ऐक्ट ईस्ट टू इंडो–पैसिफिकः इंडिया'ज़ एक्सपैंडिंग स्ट्रैटेजिक होराइज़न, के डब्ल्यू पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2022, पृष्ठ 133–141
17. दुबे, मुचकुंद, इंडिया'ज़ फॉरेन पॉलिसीः कोपिंग विद द चेंजिंग वर्ल्ड, पियरसन लॉन्गमैन, नई दिल्ली, 2010, पृष्ठ 193–199
18. कोहली, अतुल, इंडिया ऐंड द ग्लोबल इकोनॉमीः चौलेंजेस ऐंड ऑपर्च्युनिटीज, कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यू यॉर्क, 2020, पृष्ठ 215–223